IJIRSET
International Journal of Innovative Research in
SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2347-6710

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 11, Issue 4, April 2022

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 8.118

9940 572 462 | 6381 907 438 | ijirset@gmail.com | www.ijirset.com

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 4, April 2022||

|DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1104038|

स्वामी विवेकानंद का भारतीय राजनीति में योगदान: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

Dr. Sunita Gupta

Associate Professor, Political Science, Government Arts College, Kota, India

सारांश

स्वामी विवेकानन्द वेदान्त के विख्यात और प्रभावशाली आध्यात्मिक गुरु थे। उनका वास्तविक नाम नरेन्द्र नाथ दत्त था। उन्होंने अमेरिका स्थित शिकागो में सन् 1893 में आयोजित विश्व धर्म महासभा में भारत की ओर से सनातन धर्म का प्रतिनिधित्व किया था। भारत का आध्यात्मिकता से परिपूर्ण वेदान्त दर्शन अमेरिका और यूरोप के हर एक देश में स्वामी विवेकानन्द की वक्तृता के कारण ही पहुँचा। उन्होंने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की थी जो आज भी अपना काम कर रहा है। वे रामकृष्ण परमहंस के सुयोग्य शिष्य थे। उन्हें 2 मिनट का समय दिया गया था किन्तु उन्हें प्रमुख रूप से उनके भाषण का आरम्भ "मेरे अमेरिकी बहनों एवं भाइयों" के साथ करने के लिये जाना जाता है। उनके संबोधन के इस प्रथम वाक्य ने सबका दिल जीत लिया था।कलकत्ता के एक कुलीन बंगाली ब्राम्हणपरिवार में जन्मे विवेकानन्द आध्यात्मिकता की ओर झुके हुए थे। वे अपने गुरु रामकृष्ण देव से काफी प्रभावित थे जिनसे उन्होंने सीखा कि सारे जीवो मे स्वयं परमात्मा का ही अस्तित्व हैं; इसलिए मानव जाति अथेअथ जो मनुष्य दूसरे जरूरतमन्दो मदद करता है या सेवा द्वारा परमात्मा की भी सेवा की जा सकती है। रामकृष्ण की मृत्यु के बाद विवेकानन्द ने बड़े पैमाने पर भारतीय उपमहाद्वीप की यात्रा की और ब्रिटिश भारत में तत्कालीन स्थितियों का प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त किया। बाद में विश्व धर्म संसद 1893 में भारत का प्रतिनिधित्व करने, संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए प्रस्थान किया। विवेकानन्द ने संयुक्त राज्य अमेरिका, इंग्लैंड और यूरोप में हिंदू दर्शन के सिद्धान्तों का प्रसार किया और कई सार्वजनिक और निजी व्याख्यानों का आयोजन किया। भारत में विवेकानन्द को एक देशभक्त सन्यासी के रूप में माना जाता है और उनके जन्मदिन को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है।

परिचय

विवेकानंद ने आंतरिक शुद्धता एवं आत्मा की एकता के सिद्धांत पर आधारित नैतिकता की नवीन अवधारणा प्रस्तुत की। विवेकानंद के अनुसार, नैतिकता और कुछ नहीं बल्कि व्यक्ति को एक अच्छा नागरिक बनाने में सहायता करने वाली नियम संहिता है।स्वामी

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 4, April 2022||

|DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1104038|

विवेकानंद का मानना है कि किसी भी राष्ट्र का युवा जागरूक और अपने उद्देश्य के प्रति समर्पित हो, तो वह देश किसी भी लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है।

मेरे अमरीकी बहनों और भाइयों!

आपने जिस सम्मान सौहार्द और स्नेह के साथ हम लोगों का स्वागत किया हैं उसके प्रति आभार प्रकट करने के निमित्त खड़े होते समय मेरा हृदय अवर्णनीय हर्ष से पूर्ण हो रहा हैं। संसार में संन्यासियों की सबसे प्राचीन परम्परा की ओर से मैं आपको धन्यवाद देता हूँ; धर्मों की माता की ओर से धन्यवाद देता हूँ; और सभी सम्प्रदायों एवं मतों के कोटि कोटि हिन्दुओं की ओर से भी धन्यवाद देता हूँ।

मैं इस मंच पर से बोलने वाले उन कतिपय वक्ताओं के प्रति भी धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ जिन्होंने प्राची के प्रतिनिधियों का उल्लेख करते समय आपको यह बतलाया है कि सुदूर देशों के ये लोग सहिष्णुता का भाव विविध देशों में प्रचारित करने के गौरव का दावा कर सकते हैं। मैं एक ऐसे धर्म का अनुयायी होने में गर्व का अनुभव करता हूँ जिसने संसार को सहिष्णुता तथा सार्वभौम स्वीकृत-दोनों की ही शिक्षा दी हैं। हम लोग सब धर्मों के प्रति केवल सहिष्णुता में ही विश्वास नहीं करते वरन समस्त धर्मों को सच्चा मान कर स्वीकार करते हैं। मुझे ऐसे देश का व्यक्ति होने का अभिमान है जिसने इस पृथ्वी के समस्त धर्मों और देशों के उत्पीड़ितों और शरणार्थियों को आश्रय दिया है। मुझे आपको यह बतलाते हुए गर्व होता हैं कि हमने अपने वक्ष में उन यहूदियों के विशुद्धतम अवशिष्ट को स्थान दिया था जिन्होंने दक्षिण भारत आकर उसी वर्ष शरण ली थी जिस वर्ष उनका पवित्र मन्दिर रोमन जाति के अत्याचार से धूल में मिला दिया गया था। ऐसे धर्म का अनुयायी होने में मैं गर्व का अनुभव करता हूँ जिसने महान जरथुष्ट जाति के अवशिष्ट अंश को शरण दी और जिसका पालन वह अब तक कर रहा है। भाईयो मैं आप लोगों को एक स्तोत्र की कुछ पंक्तियाँ सुनाता हूँ जिसकी आवृति मैं बचपन से कर रहा हूँ और जिसकी आवृति प्रतिदिन लाखों मनुष्य किया करते हैं:

रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषाम्। नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव॥

अर्थात जैसे विभिन्न नदियाँ भिन्न भिन्न स्रोतों से निकलकर समुद्र में मिल जाती हैं उसी प्रकार हे प्रभो! भिन्न-भिन्न रुचि के अनुसार विभिन्न टेढ़े-मेढ़े अथवा सीधे रास्ते से जानेवाले लोग अन्त में तुझमें ही आकर मिल जाते हैं।

यह सभा, जो अभी तक आयोजित सर्वश्रेष्ठ पवित्र सम्मेलनों में से एक है स्वतः ही गीता के इस अद्भुत उपदेश का प्रतिपादन एवं जगत के प्रति उसकी घोषणा करती है:

ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्। मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः॥

अर्थात जो कोई मेरी ओर आता है-चाहे किसी प्रकार से हो-मैं उसको प्राप्त होता हूँ। लोग भिन्न मार्ग द्वारा प्रयत्न करते हुए अन्त में मेरी ही ओर आते हैं।

साम्प्रदायिकता, हठधर्मिता और उनकी वीभत्स वंशधर धर्मान्धता इस सुन्दर पृथ्वी पर बहुत समय तक राज्य कर चुकी हैं। वे पृथ्वी को हिंसा से भरती रही हैं व उसको बारम्बार मानवता के रक्त से नहलाती रही हैं, सभ्यताओं को ध्वस्त करती हुई पूरे के पूरे देशों को निराशा के गर्त में डालती रही हैं। यदि ये वीभत्स दानवी शक्तियाँ न होतीं तो मानव समाज आज की अवस्था से कहीं अधिक उन्नत हो गया होता। पर अब उनका समय आ गया हैं और मैं आन्तरिक रूप से आशा करता हूँ कि आज सुबह इस सभा के सम्मान में जो घण्टा ध्वनि हुई है वह समस्त धर्मान्धता का, तलवार या लेखनी के द्वारा होनेवाले सभी उत्पीड़नों का तथा एक ही लक्ष्य की ओर अग्रसर होने वाले मानवों की पारस्पारिक कटुता का मृत्यु निनाद सिद्ध हो।

विवेकानंद ने इस बात पर बल दिया कि पश्चिम की भौतिक और आधुनिक संस्कृति की ओर भारतीय आध्यात्मिकता का प्रसार करना चाहिये, जबकि वे भारत के वैज्ञानिक आधुनिकीकरण के पक्ष में भी मजबूती से खड़े हुए।उन्होंने जगदीश चंद्र बोस की वैज्ञानिक परियोजनाओं का भी समर्थन किया। स्वामी विवेकानंद ने आयरिश शिक्षिका मार्गरेट नोबल (जिन्हें उन्होंने 'सिस्टर निवेदिता' का नाम दिया) को भारत आमंत्रित किया ताकि वे भारतीय महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने में सहयोग कर सकें।महात्मा गांधी द्वारा सामाजिक रूप से शोषित लोगों को 'हरिजन' शब्द से संबोधित किये जाने के वर्षों पहले ही स्वामी विवेकानंद ने 'दरिद्र नारायण' शब्द का प्रयोग किया था जिसका आशय था कि 'गरीबों की सेवा ही ईश्वर की सेवा है।'पश्चिमी राष्ट्रवाद के विपरीत विवेकानंद का राष्ट्रवाद भारतीय धर्म पर आधारित है जो भारतीय लोगों का जीवन रस है। भारतीय संस्कृति के प्रमुख घटक मानववाद एवं सार्वभौमिकतावाद विवेकानंद के राष्ट्रवाद की आधारशिला माने जा सकते हैं।

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 4, April 2022||

|DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1104038|

विचार – विमर्श

राष्ट्रवाद किसी देश के प्रति निष्ठा या राष्ट्रीय चेतना की भावना के रूप में परिभाषित किया जाता है। एक उस देश को अन्य देशों से ऊपर रखता है। यह मुख्य रूप से अन्य देशों या अंतरराष्ट्रीय समूहों की तुलना में अपनी राष्ट्रीय संस्कृति और हितों को बढ़ावा देने पर बल देता है। राष्ट्रवाद पर विवेकानंद के विचार भौगोलिक या राजनीतिक या भावनात्मक एकता पर आधारित नहीं थे, न ही इस भावना पर कि 'हम भारतीय हैं। राष्ट्रवाद पर उनके विचार गहन आध्यात्मिक थे। उनके अनुसार यह लोगों का आध्यात्मिक एकीकरण, आत्मा की आध्यात्मिक जागृति था। उन्होंने प्रचलित विविधता को विभिन्न आधारों पर पहचाना और सुझाव दिया कि भारतीय राष्ट्रवाद पश्चिम की तरह पृथकतावादी नहीं हो सकता है।

उनके अनुसार भारतीय लोग गहन धार्मिक प्रकृति के हैं और इससे एकजुट होने की शक्ति प्राप्त की जा सकती है। राष्ट्रीय आदर्शों के विकास से उद्देश्य और कार्यवाही में एकता प्राप्त की जा सकती है। उन्होंने करुणा, सेवा और त्याग को राष्ट्रीय आदर्शों के रूप में मान्यता दी। इसलिए विवेकानंद के लिए राष्ट्रवाद सार्वभौमिकता और मानवता पर आधारित था।

उनका मानना था कि प्रत्येक देश में एक ऐसा प्रभावी सिद्धांत होता जो उस देश के जीवन में समग्र रूप से परिलक्षित होता है और भारत के लिए यह धर्म था। धर्मनिरपेक्षता पर आधारित पश्चिमी राष्ट्रवाद के विपरीत स्वामी विवेकानंद के राष्ट्रवाद का आधार धर्म, भारतीय आध्यात्मिकता और नैतिकता थी। भारत में आध्यात्मिकता को सभी धार्मिक शक्तियों के संगम के रूप में देखा जाता है। यह माना जाता है कि यह इन सभी शक्तिओं को राष्ट्रीय प्रवाह में एकजुट करने में सक्षम है।

उन्होंने मानवतावाद और सार्वभौमिकता के आदर्शों को भी राष्ट्रवाद के आधार के रूप में स्वीकार किया। इन आदर्शों ने लोगों का स्व-प्रेरित बंधनों और उनके परिणामी दुखों से मुक्त होने हेतु पथप्रदर्शन किया है।

पिछली दो शताब्दियों के दौरान राष्ट्रवाद विभिन्न चरणों से गुज़रा है और सर्वाधिक आकर्षक शक्तियों में से एक के रूप में उभरा है। इसने लोगों को एकजुट करने के साथ-साथ विभाजित भी किया है। उन्नीसवीं शताब्दी में इसने यूरोप के एकीकरण तथा एशिया और अफ्रीका में उपनिवेशों की समाप्ति में प्रमुख भूमिका निभाई थी।हालांकि, वर्तमान विश्व में कट्टरपंथी राष्ट्रवाद का उदय हो रहा है। अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के स्थापित सम्मेलनों से संयुक्त राज्य अमेरिका का अलग होना, ब्रेक्ज़िट, स्कॉटलैंड की स्वतंत्रता के लिए दूसरे जनमत संग्रह की मांग इत्यादि इसके कुछ उदाहरण हैं। ऐसे में राष्ट्रवाद के एक संकीर्ण दृष्टिकोण ने अनेक समूहों में पैठ बना ली है। ये समूह दूसरों पर अपने अधिकार और अपने विशेषाधिकारों को सुनिश्चित करना चाहते हैं। ऐसा राष्ट्रवाद राष्ट्रों को विभाजित करता है, उन्हें अलग करता है और असमानता बढ़ाने वाली अर्थव्यवस्थाओं को जन्म देता है। साथ ही यह अनेक ऐसे लोगों को देश से दूर कर देता है जो देश के लिए योगदान दे सकते हैं।आधुनिक राष्ट्रवाद की विभाजनकारी शक्तियों के विपरीत स्वामी विवेकानंद का दृष्टिकोण सार्वभौमिक पहुँच और आध्यात्मिक पहचान की एकता पर केंद्रित था। यह समय उनकी "प्रबुद्ध राष्ट्रवाद" की धारणा को आत्मसात करने का है जो इस बात पर बल देता है कि किसी एक देश का दूसरे देश पर अधिग्रहण करने का कोई आध्यात्मिक या नैतिक औचित्य नहीं हो सकता है।

परिणाम

विवेकानन्द ने कहा –"मुझे गर्व है कि मैं उस धर्म से हूं जिसने दुनिया को सहिष्णुता और सार्वभौमिक स्वीकृति का पाठ पढ़ाया हम सिर्फ सार्वभौमिक सहिष्णुता पर ही विश्वास नहीं करते बल्कि हम सभी धर्मों को सच के रूप में स्वीकार करते हैं. मुझे गर्व है कि मैं उस देश से हूं जिसने सभी धर्मों और सभी देशों से सताए गए लोगों को अपने यहां शरण दी. मुझे गर्व है कि आपने दिल में हमने इजरायल की वह पवित्र यादें संजो कर रखी हैं जो हमलावरों ने नष्ट कर दी" गीता के श्लोक को उद्धृत कर विवेकानंद कहते हैं. "जो भी मुझ तक आता है चाहे कैसा भी हो मैं उस तक पहुंचता हूं. लोग अलग-अलग रास्ते चुनते हैं परेशानियां झेलते हैं. लेकिन आखिर में मुझ तक पहुंचते हैं"अर्थात सभी धर्मों की शिक्षाएं, सभी धर्मों के रास्ते भले ही अलग-अलग हैं लेकिन सब धर्मों का मूल वह एक सर्वशक्तिमान ही है. जो मानवता में ही प्रतिबिंबित होता है. अर्थात मनुष्यता का कल्याण ही सभी धर्मो का मूल है.

"सांप्रदायिक कट्टरता और इसके भयानक वंशजों के धार्मिक हठ ने लंबे समय से इस खूबसूरत धरती को जकड़ रखा है. उन्होंने इस धरती को हिंसा से भर दिया है और कितनी ही बार यह धरती खून से लाल हो चुकी है. न जाने कितनी सभ्यताएं तबाह हुई, कितने देश मिटा दिए गए. यदि यह खौफनाक राक्षस नहीं होते तो मानव समाज कहीं ज्यादा बेहतर होता जितना की अभी है."धर्म संसद मे विवेकानंद पूरी दुनिया से हर तरह की कट्टरता हठधर्मिता और दुखों का विनाश करने का आह्वान करते हैं फिर चाहे यह विनाश तलवार से किया जाए अथवा कलम से. विवेकानंद के ऐसे ही धार्मिक विचार का सम्मान करते हुए सुभाष चंद्र बोस उन्हें आधुनिक भारत का निर्माता कहते हैं. जिस प्रकार की धर्म की कल्पना विवेकानंद ने की, जिसके मूल में मानव कल्याण हो, जिसमें किसी भी प्रकार की कट्टरता और हिंसा ना हो, धर्म का वही स्वरूप भारतीय संविधान के धर्मनिरपेक्ष स्वरूप में भी झलकता है.

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 4, April 2022||

|DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1104038|

वह हर प्रकार की सांप्रदायिकता और कट्टरता का विरोध करते हैं. यही उदार और सहिष्णु धर्म विवेकानंद के राष्ट्रवाद का आधार भी है.मौजूदा समय मे समाज में राष्ट्रवाद के नाम पर विभिन्न प्रकार की कट्टर धार्मिक गतिविधियां जारी हैं. अलग-अलग प्रकार के संगठन इस कथित राष्ट्रवाद के विचार को पुष्पित पल्लवित कर रहे हैं. लेकिन उनमें से अधिकांश संगठन जिस राष्ट्रवाद की अवधारणा को आगे लेकर आते हैं वह अवधारणा बहुसंख्यक समाज के धार्मिक हितों और प्रतीकों को आगे करके गढ़ी जाती है, जिसमें धार्मिक सहिष्णुता का तत्व विलीन होता दिखता है. वह विपरीत मत के धर्मावलंबियों को सुरक्षा का भाव ना देकर, एक अज्ञात भय से भर देता है.इस प्रकार राष्ट्रवाद के नाम पर जिस प्रकार की धार्मिक अवधारणाओं को आज आगे किया जा रहा है. धार्मिक आधार पर मॉब लिंचिंग की घटनाएं हो रही हैं जिसकी पराकाष्ठा ने कानून के शासन के समक्ष चुनौतियां पेश कर दी है मजबूरन जिस पर सर्वोच्च न्यायालय को हस्तक्षेप करना पड़ रहा है ऐसा किसी राष्ट्रीय शर्म से कम नहीं है.

राष्ट्रवाद के नाम पर ऐसी गतिविधियां, निश्चित रूप से विवेकानंद के बहु-सांस्कृतिक और सहिष्णु राष्ट्रवाद पर चोट करते प्रतीत होती हैं. यही आज के समय की सबसे बड़ी चुनौती भी है. शिकागो धर्म सम्मेलन में विवेकानंद द्वारा धर्म के जिन मूल तत्व को रेखांकित किया, यदि आज हम उन्हें समझने लगें तो, धर्म के आधार पर राष्ट्र के समक्ष उपस्थित समक्ष समस्त खतरे स्वतः समाप्त हो जाएंगे और इस प्रकार की समझ का विकसित होना ही विवेकानंद को सच्ची श्रद्धांजली होगी.

निष्कर्ष

स्वामी विवेकानंद हर तरह की विविधता के समर्थक थे। बहुलता पर आधारित राष्ट्रवाद उनका लक्ष्य था।उनका कहना था कि-हल पकड़े हुए किसानो की कुटिया से नए भारत का उदय हो...मोची मछुआरों और भंगी के दिल से नए भारत का उदय हो... पंसारी की दुकान से नए भारत का जन्म हो... बगीचों और जंगलो से उसे निकलने दो... पर्वतो और पहाड़ों से उसे निकलने दो...

विवेकानंद जी का मानना था कि, नैसर्गिक और स्वस्थ राष्ट्रवाद का विकास तभी होगा, जब न सिर्फ धर्मों के बीच, बल्की पूरब और पश्चिम की संस्कृतियों के बीच बराबरी का आदान-प्रदान हो।1893, में शिकागो की धर्मसभा में दिया गया विवेकानंद जी का भाषण उनकी विश्व बंधुत्व की सोच को बिलकुल स्पष्ट करता है। उनकी पहली पंक्ति थी, "अमेरिकी बहनों और भाइयों।" जो विश्व को एक सूत्र में एक दृष्टी से देखता है, ऐसे महान व्यक्ति को यदा-कदा हिन्दु राष्ट्रवाद की बहस में एक उग्र धार्मिक राष्ट्रवाद की परिकल्पना में पेश किया जाता है। यदि विवेकानंद जी के जीवन दर्शन को ध्यान से समझा जाये तो ऐसे मनगढ़ंत और भ्रामक व्यक्तत्व बिलकुल ही निराधार नज़र आते हैं।आधुनिक भारत के इतिहासकार अमिय पी सेन ने अपनी किताब 'स्वामी विवेकानंद' में लिखा है कि-विवेकानंद हिंदू शब्द का इस्तेमाल व्यापक और सांस्कृतिक संदर्भों में किया करते थे।

सिस्टर निवेदिता ने भी कई बार कहा है कि, जब स्वामी जी को खासतौर से हिंदू धर्म के अनुयायियों की बात करनी होती थी, तब वे 'वैदिक या वेदांतिक' शब्द का इस्तेमाल करते थे। सिस्टर निवेदिता ने अपनी किताब 'नोट्स ऑफ सम वांडरिंग विद स्वामी विवेकानंद' में उनको सांस्कृतिक संश्लेषक की उपाधी दी है।विवेकानंद जी का राष्ट्रवाद मिश्रित और बहुलतावादी था। स्वामी जी अपनी एक घटना का जिक्र बार-बार करते थे, जो उनकी उदार सोच को बयान करती है।जब विवेकानंद जी विश्व भ्रमण पर थे, तब वे अलमोड़ा पहुँचे। एक दिन वे एक दरगाह के सामने बेहोश हो गये थे, तब दरगाह की रखवाली करने वाले फकीर जुल्फिकार अली ने उनकी जान बचाई थी और उनको खाने के लिये ककड़ी दी थी।विवेकानंद जी अपनी मातृभूमि के उत्थान के लिये जिस राष्ट्रवाद की कल्पना करते हैं, उसके मूल में मानवतावाद, आध्यात्मिक विकास और सांस्कृतिक नवजागरण है। इसे हासिल करने के लिये उन्होने वेदांतिक दर्शन को अपना उपकरण बनाया। विवेकानंद जी जिस भूमिका को समझने की बात करते थे, वह नए मनुष्य और नए समाज की भूमिका थी। करुणा, व्यक्तिगत स्वतंत्रता, समानता और विश्वबंधुत्व पर आधारित आधुनिक शक्तिशाली भारत के निर्माण की भूमिका थी।शिकागो धर्मसभा के विदाई भाषण में विवेकानंद जी ने कहा था,

धर्मों के बीच एकता के बारे में बहुत कुछ कहा गया है लेकिन अगर कोई ये सोचता है कि एक धर्म के दूसरे धर्म पर जीत स्थापित करने से एकता स्थापित होगी तो ये गलत है। मैं उन्हे कहना चाहता हूँ कि बंधु आप गलत उम्मीद लगा बैठे हैं। क्या मुझे यह उम्मीद लगानी चाहिये कि क्रिश्चियन हिंदू हो जाये या फिर हिंदू और बौद्धों को क्रिश्चियन हो जाना चाहिये। ईश्वर माफ करे।'स्वामी विवेकानंद एंड मॉडर्नाइजेशन ऑफ हिन्दुज़्म' में हिलटुड रुस्टाव ने लिखा है कि, विवेकानंद एक ऐसा समाज चाहते थे, जहाँ बड़े से बड़ा सत्य उद्घाटित हो सके और हर इंसान को देवत्व का अहसास हो। विवेकानंद सच को अपना देवता मानते थे और कहते थे कि पूरी दुनिया मेरा देश है। राष्ट्रवाद और राष्ट्रीयता उनके लिये किसी संकीर्णता का नाम नही था।विवेकानंद जी तो ऐसे राष्ट्रवादी संत थे, जिन्हे भारत की मिट्टी के कण-कण से प्यार था। उनका कहना था,मैं भारतीय हूँ और हर भारतीय मेरा भाई है। अज्ञानी हो या फिर

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 4, April 2022||

|DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1104038|

गरीब हो, अभावग्रस्त हो या ब्राह्मण या फिर अछूत हो वो मेरा भाई है। भारत का समाज मेरे बचपन का पालना है और मेरे जवानी के आनंद का बगीचा है। मेरे बुढापे की काशी है। भारत की मिट्टी मेरे लिये सबसे बङा स्वर्ग है।

ऐसे सात्विक और विश्व बंधुत्व की भावना वाले स्वामी विवेकानंद जी का नाम जैसे ही जहन में आता है, मन में उनके प्रति श्रद्धा की अनुभूति होती है। भारत के नैतिक मूल्यों को विश्व के कोने-कोने में पहुँचाने वाले स्वामी विवेकानंद जी के राष्ट्रीय विचार हमारे अंदर देशप्रेम की भावना का संचार करते हैं। विदेशों में भारतीय संस्कृति की सुगंध फैलाने वाले स्वामी विवेकानंद जी को शत् शत् वंदन और नमन करते हुए उनकी कही बात, 'मानव सेवा ही ईश्वर सेवा है' को जीवन में अपनाने का संकल्प करते हैं।
स्वामी जी के कहे संदेश के साथ उनका स्मरण करते हुए अपनी कलम को विराम देते हैं...बालकों, दृण बने रहो, मेरी संतानों में से कोई भी कायर न बने। तुम लोगों में जो सबसे अधिक साहसी है सदा उसी का साथ करो। बिना विघ्न-बाधाओं के क्या कभी कोई महान कार्य हो सकता है समय पर धैर्य तथा अदम्य इच्छा-शक्ति से ही कार्य संपन्न होता है।

संदर्भ

1. "Bhajanānanda (2010), Four Basic Principles of Advaita Vedanta, p.3" (PDF). मूल से 7 मार्च 2016 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 12 जनवरी 2016.
2. ↑ Michelis 2005.
3. ↑ Aspects of the Vedanta, p.150
4. ↑ Dutt, Harshavardhan (2005), Immortal Speeches, नई दिल्ली: Unicorn Books, p. 121, ISBN 978-81-7806-093-4
5. ↑ "Swami Vivekananda Punyatithi [Hindi]: स्वामी विवेकानंद जी क्यों रहे मोक्ष से वंचित". S A NEWS (अंग्रेज़ी में). 2021-07-04. अभिगमन तिथि 2021-07-04.
6. ↑ क्रान्त (2006). / स्वाधीनता संग्राम के क्रान्तिकारी साहित्य का इतिहास जाँचें |url= मान (मदद). **2**. नई दिल्ली: प्रवीण प्रकाशन. पृ° 390. आई°ऍस°बी°ऍन° 81-7783-119-4. मूल से 14 अक्तूबर 2013 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 4 जुलाई 2013.
7. ↑ शुक्ल, पंडित विद्याभास्कर. "स्वामी विवेकानंद का जीवन परिचय". मूल से 19 अगस्त 2019 को पुरालेखित.
8. ↑ Paul 2003, पृ° 5.
9. ↑ Banhatti 1995, पृ° 1.
10. ↑ Badrinath 2006, पृ° 3.
11. ↑ Bhuyan 2003, पृ° 4.
12. ↑ Nikhilananda 1964.
13. ↑ Sen 2003, पृ° 20.
14. ↑ Banhatti 1995, पृ° 2.
15. ↑ Banhatti 1995.
16. ↑ Banhatti 1995, पृ° 4.
17. ↑ Chakrabarti 2001, पृ°प° 628–631.
18. ↑ Sen 2003, पृ° 21.
19. ↑ Sen 2006, पृ°प° 12–14.
20. ↑ Sen 2003, पृ°प° 104–105.

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor
Impact Factor: 8.118

doi cross ref

ISSN INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

9940 572 462 6381 907 438 ijirset@gmail.com

www.ijirset.com

Scan to save the contact details